राष्ट्रीय शिक्षा नीति २०२० में कौशल विकासः एक समग्र अध्ययन

डॉ. ए. एम. सिंह
सहायक आचार्य,
शिक्षा विभाग
रजत कॉलेज, अंबेडकर नगर

सारांश:

प्राचीन वैदिक शिक्षा प्रणाली से लेकर वर्तमान राष्ट्रीय शिक्षा नीति २०२० तक शिक्षा व्यवस्था में कई बदलाव आये, जो हमारी आवश्यकताओं के अनुरूप हुए। शिक्षा मनुष्य का सर्वांगिण विकास करती है। स्वामी विवेकानंद जी के अनुसार- "शिक्षा मनुष्य की अन्तर्निहित पूर्णतः की अभिव्यक्ति है। वर्तमान समय में शिक्षा के उद्देश्य एवं क्षेत्र व्यापक हो गये हैं। नैतिक विकास के साथ-साथ शिक्षा आजीविका के लिए महत्वपूर्ण है। विज्ञान एवं तकनीकी का भी तीव्र गति से विकास हो रहा है जिसके कारण कौशल विकास की शिक्षा अत्यधिक आवश्यक है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने स्वरोजगार को बढ़ावा देने के लिए "प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना" जुलाई २०१५ में शुरू की, जिसका उद्देश्य ऐसे लोगों को रोजगार प्रदान कराना है जो कम पढे-लिखे हैं या जिन्होंने बीच में स्कूल छोड़ दिया हो। २०२० तक यह लक्ष्य ऐसे १ करोड़ युवाओं को प्रशिक्षित करने का था। छात्रों का कौशल विकास यदि स्कूली शिक्षा के साथ-साथ किया जाये तो अलग से समय व धन का अपव्यय नहीं होगा। नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति २०२० में व्यावसायिक पाठ्यक्रम को शामिल किया गया है एवं मिडिल स्टेज से ही छात्र अपनी आवश्यकतानुसार पसंदीदा कौशल का चुनाव कर विद्यालयी शिक्षा के साथ कौशल में निपुणता प्राप्त कर सकता है, जिसमें स्थानीय विशेषज्ञ प्रशिक्षण प्रदान करेंगे।

मुख्य बिन्दु: *राष्ट्रीय नई शिक्षा नीति २०२०, कौशल, व्यावसायिक, पाठ्यक्रम*

१. प्रस्तावना

२९ जुलाई २०२० को नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति को प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी की अध्यक्षता वाली कैबिनेट समिति द्वारा मंजूरी दी गई है जो १९८६ के ३४ साल बाद आयी है। नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति आयोग के अध्यक्ष इसरो के पूर्व वैज्ञानिक डॉ. के. कस्तूरीरंगन थे। नई शिक्षा नीति को प्रस्तुत करते हुए शिक्षा मंत्री डॉ. रमेश पोखरियाल निशंक जी ने कहा- 'दुनिया में इससे बड़ा परामर्श, विचार विमर्श कभी नही हुआ होगा, यह नवाचार का उदाहरण है। नई शिक्षा नीति के लिए देश के कोने-कोने से विचार विमर्श किया गया। देश का भविष्य स्कूल एवं महाविद्यालय से शिक्षित छात्रों की गुणवत्ता से निर्मित होता है, छात्रों का कौशल विकास कर उत्पादनशील बनाना आवश्यक है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति में छात्रों के शारीरिक शिक्षा, व्यावसायिक शिक्षा, तकनीकी शिक्षा, कला एवं शिल्प की शिक्षा, स्थानीय भाषा, मातृभाषा, राष्ट्रभाषा, विदेशी भाषा की शिक्षा का प्रावधान किया

गया, जिससे छात्रों का कौशल विकास सम्भव हो सकेगा। नई शिक्षा नीति २०२० में छात्रों को विभिन्न ग्रेड के माध्यम से व्यावसायिक शिल्प जैसे बढ़ईगिरि, बिजली का काम, धातु का काम, बागवानी, मिट्टी के बर्तन आदि कौशल का प्रशिक्षण दिया जायेगा। छात्रों को कोर्स चुनाव में विकल्प व लचीलापन प्रदान किया गया है, जिससे छात्र कला वर्ग, विज्ञान वर्ग, एवं वाणिज्य वर्ग में से किसी भी विषय को चुन सकता है।

२. अध्ययन का उद्देश्य

१. नई शिक्षा नीति २०२० के महत्वपूर्ण बिन्दुओं पर प्रकाश डालना।
२. नई शिक्षा नीति २०२० में कौशल विकास के आयाम को जानना।

३. शोध विधि

यह लेखपत्र द्वितीयक स्त्रोतों के माध्यम से लिखा गया है। इस हेतु समाचार पत्रो, पुस्तकों, इण्टरनेट से जानकारी का संकलन किया गया है।

४. शोध समीक्षा

शिक्षा व्यक्ति, राष्ट्र व विश्व के कल्याण एवं विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। शिक्षा प्राचीन ज्ञान, अस्मिता, गौरव से परिचित करवाती है। वर्तमान में समस्त चुनौतियों के लिए तैर करती है एवं भावी जीवन के लिए पूर्व तैयारी करवाती है। समय के साथ-साथ जरूरतें बदलर्त अतः शिक्षा नीति में भी परिवर्तन आवश्यक है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति २०२० के अनुसार ज्ञान के परिदष्ट्य में पूरा विश्व तेजी से परिवर्तन के दौर से गुजर रहा है। बिग डेटा, मशीन लर्निंग और आर्टिफीसियल इंटेलिजेंस जैसे क्षेत्रों में हो रहे बहुत से वैज्ञानिक और तकनीकी विकास के चलते एक ओर विश्व भर में अकुशल कामगारों की जगह मशीने काम करने लगेंगी और दूसरी ओर डेटा साइंस, कम्प्यूटर साइंस और गणित के क्षेत्रों में ऐसे कुशल कामगारों की जरूरत और मॉग बढ़ेगी जो विज्ञान, समाज विज्ञान, और मानविकी के विविध विषयों में योग्यता रखते हो। आगे इसमें बच्चों के सतत् सीखने पर बल दिया गया एवं बच्चे समस्या समाधान और रचनात्मक रूप से सोचे व विषयों के बीच अन्तर्सम्बंधों को देखें। साथ ही शिक्षार्थियों में नैतिकता, तार्किकता, संवेदनशीलता विकसित करने एवं रोजगार के लिए सक्षम बनाने आदि बिन्दुओं पर नई शिक्षा नीति में विचार किया गया है।

५. नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति २०२० के मूलभूत सिद्धान्तों में कौशल विकास के आयाम

नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति के निम्नलिखित सिद्धान्त, कौशल विकास में निम्नलिखित भूमिका निभा सकते हैं।

- हर बच्चें की विशिष्ट क्षमताओं की स्वीकृति, पहचान और उनके विकास हेतु प्रयास करना,
- लचीलापन,
- रचनात्मकता और तार्किक सोच,
- बहुभाषिकता,
- जीवन कौशल,

- सीखने के लिए सतत मूल्यांकन पर जोर,
- तकनीकी के यथासंभव उपयोग पर जोर,
- गुणवत्तापूर्ण शिक्षा और विकास के लिए उत्कृष्ट स्तर का शोध,
- भारतीय जड़ों और गौरव से बंधे रहना।

उपर्युक्त सिद्धांतों के अन्तर्गत प्रत्येक बच्चा अपनी पसंद के कौशल का चुनाव कर उसमें भविष्य में बेहतर प्रगति कर सकता है। पसंदीदा कार्य को करने में समय, धन एवं श्रम की बचत व कार्य निपुणता आती है। नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति का सिद्धान्त छात्रों को कला/विज्ञान के विषय चुनाव, पाठ्यक्रम / पाठ्येतर क्रियाओं का चुनाव में लचीलापन प्रदान करता है जिससे छात्र अलग-अलग क्षेत्रों में कौशल का विकास कर सकते हैं। नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति का (६) सिंद्धान्त छात्रों के कौशल विकास के लिए आवश्यक है क्योंकि पुराने ज्ञान को आगे बढाना हो या नवीन अन्वेषण करना हो, रचना और तार्किक सोच से ही सम्भव है। बहुभाषिकता ज्ञान व कौशल के स्त्रोत बढाती है। भाषा का क्षेत्र जितना व्यापक होगा, व्यवसाय चुनाव का क्षेत्र भी उतना व्यापक होता जायेगा। नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति के परिचय में स्पष्ट उल्लेख किया गया है कि भारत द्वारा २०१५ में अपनाए गये सतत् विकास एजेंडा २०३० के लक्ष्य ४ में परिलक्षित वैश्विक शिक्षा विकास एजेंडा के अनुसार विश्व में २०३० तक "सभी के लिए समावेशी और समान गुणवतायुक्त शिक्षा सुनिश्चित करने और जीवनपर्यन्त शिक्षा के अवसरों को बढ़ावा दिये जाने का लक्ष्य है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति में स्कूल पाठ्यक्रम को ५+३+३+४ में पुनर्गठित किया गया है। जिसके तहत पाठ्यक्रम को विद्यार्थियों के विकास,रुचि के अनुसार क्रमशः निम्नलिखित स्टेज में बॉटा हैं।

१. फाउंडेशनल स्टेज (दो भागों में अर्थात् आंगनबाड़ी/प्री-स्कूल के ३ साल + प्राथमिक स्कूल में कक्षा १-२ तक)
२. प्रिपरेटरी स्टेज (कक्षा ३ से ५ तक)
३. मिडिल स्कूल स्टेज (कक्षा ६ से ८ तक)
४. सेकेंडरी स्टेज (कक्षा ९ से १२ तक)
   - स्नातक
   - स्नातकोत्तर

नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति २०२० में पाठ्यक्रम के स्टेज के महत्वपूर्ण बिन्दुओं को सार रूप में निम्नलिखित प्रकार से देखा जा सकता है। फाउंडेशनल स्टेज के अन्तर्गत बच्चों को प्रवेश दिलाना, खेल-खेल में सिखाना। छात्रों को परीक्षा से मुक्त रखा गया है व मातृभाषा, स्थानीयभाषा में पढाई का माध्यम होगा जिससे छात्रों को अधिगम में सुगमता होगी। प्रिपरेटरी स्टेज शिक्षा में भाषाओं को संवादात्मक रूप से सिखाना एवं अंग्रेजी को विषय के रूप में पढ़ाना पर बल दिया गया। मिडिल स्कूल स्टेज में छात्रों को विभिन्न विषयों के साथ कम्प्यूटर कोडिंग की जानकारी, व्यावसायिक कोर्स, तकनीकी कोर्स जैसे- सिलाई, बढ़ईगिरि, मत्स्य पालन, पेन्टिंग आदि कौशलों को भी रूचि अनुसार सीख सकेंगे व सेकेंड्ररी स्टेज में परीक्षा ६ माह में होगी। साथ ही मल्टीपल विषयों का चुनाव छात्रकर सकेंगे एवं १ विदेशी भाषा का अध्ययन किया जा सकेगा। स्नातक में प्रथम वर्ष सर्टिफिकेट, द्वितीय वर्ष

में डिप्लोमा तृतीय वर्ष में डिग्री प्रदान किये जाने का प्रावधान है। जिससे बीच में पढाई छोड़ने वाले छात्रों को लाभ होगा वे पुनः अपनी पढाई पूरी कर सकेंगे।

नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति में विदेशी वि.वि जो टॉप ५० की सूची में हैं वे भारत में अपनी शाखायें खोल सकते हैं जिससे छात्र उनका लाभ उठा सकेंगे। नई शिक्षा नीति में शिक्षा को रोजगार परक बनाने पर बल दिया गया है, एवं मूल्याकन विधि में भी बदलाव किया गया है अब छात्र स्वयं भी अपना मूल्यांकन करेंगे व सहपाठी भी मूल्यांकन करेंगे जिससे छात्रों में सहभागिता की भावना का विकास हो सकेगा। नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति में माध्यम भाषा मातृभाषा एवं स्थानीय भाषा के चुनाव पर बल दिया गया है जो कम्प्यूटर एवं तकनीकी ज्ञान के लिए अभी पूर्णतः विकसित नहीं हो पायी है। अतः भारतीय भाषाओं के विकास के लिए भी महत्वपूर्ण कदम उठाये जाये। साथ ही विभिन्न व्यावसायिक कौशल प्रशिक्षणों को छात्रों को मात्र खानापूर्ति हेतु न दिया जाये अपितु उन्हें निपुण बनाया जाये।

सन्दर्भ

१. राष्ट्रीय शिक्षा नीति (२०२०). मानव संसाधन विकास मंत्रालयः भारत सरकार।
२. दृष्टि द विजन (२०२०). (चर्चित मुद्दे). नई शिक्षा नीति।
३. सिंह, दुर्गेश (२०२०). क्रॉनिकल मासिक पत्रिका. मई. पृष्ठ ८०-८.
४. परिहार, प्रेम (२०२०). 'नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति, २०२०. सम्भावनाएँ एवं चुनौतियाँ."
५. International Journal of Applied research. Pg. १०९-१११.
६. https://www.bbc.com/hindi/india-५३५८१०८४.